राज्य अध्याय 39

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के माध्यम से, उसकी उपस्थिति के बारे में जागरूकता प्राप्त करने और उसकी आवाज़ सुनने के लिए उसके मार्गदर्शन हेतु ***प्रार्थना करें।*** अपने समूह और परमेश्वर के राज्य का प्रचार करने से सम्बंधित इस पाठ को प्रभु के हांथों में सौंपे।

2	**साझा करें** (20 मिनट) *[शांत समय]* **यिर्मयाह 1,2,4 और 10**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें (या*** अपने नोट्स से ***पढ़ें)*** कि अपने दिये गये अनुच्छेद (यिर्मयाह 1,2,4 और 10) से शान्त समय में क्या सीखा। अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें। मुख्य बातों को लिखें।

3	**स्मरण करें** (5 मिनट) *[परमेश्वर के संसाधन]* **(3) यशायाह 41:10**

दो-दो करके *पुनरावलोकन करें।*

(3) परमेश्वर की सामर्थ्य। यशायाह 41:10. मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ; मैं तुझे दृढ़ करूँगा और तेरी सहायता करूँगा, अपने धर्ममय दाहिने हाथ से मैं तुझे सम्भाले रहूँगा।

4	**शिक्षा देना** (85 मिनट) *[यीशु के दृष्टान्त]* **एक अयोग्य दास**

“एक निकम्मे दास का दृष्टान्त” लूका अध्याय 17:7-10 में,

परमेश्वर के राज्य में सेवा के बारे में दृष्टांत हैं

“एक दृष्टान्त” स्वर्गीय अर्थ को समझाने के लिए एक ज़मीनी या भौतिक कहानी होती है। यह कहानी जीवन से जुड़ी हुई सच्ची घटना या काल्पनिक कहानी होती है, जिससे एक आत्मिक सच्चाई को सिखाया जाता है। यीशु ने सार्वजनिक स्थलों और रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी से जुड़ी चीज़ों व घटनाओं का इस्तेमाल परमेश्वर के राज्य के भेदों को प्रगट करने और लोगों को उनकी असलीयत दिखाने और उन्हें अपने जीवन में परिवर्तन की आवश्यकता बताने के लिए किया। हम इस दृष्टान्त का अध्ययन करने वाले छः निर्देशों के आधार पर करेगें (नियमावली 9, परिशिष्ट 1 को देखें)।

पढ़ें लूका 17:7-10.

---

1. <u>दृष्टान्त की प्राकृतिक कहानी को समझें।</u>

परिचय। दृष्टान्त को आलंकारिक भाषा में बताया गया है और दृष्टान्त का आत्मिक अर्थ उसी पर आधारित है। इसलिए हम पहले शब्दों और कहानी की पृष्ठभूमि के सांस्कृतिक और ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन करेंगे।

चर्चा करें। कहानी के वास्तविक तत्व क्या हैं?

ध्यान दें।

स्वामी और दास । यह कहानी यीशु के दिनों में सेवकों या दासों और उनके ***स्वामियों*** के बीच के विशिष्ट संबंधों का वर्णन करती है। यह कहानी एक छोटे से खेत के मालिक की है। इस किसान के पास केवल एक दास या सेवक है। इस दास या सेवक का चित्रण इस तरह से किया जाता है की वो वही करता है जैसा उसे करने का आदेश दिया जाता है। उसका स्वामी उसके द्वारा किये गए कामों के लिए न तो उसे श्रेय देता है और ना उसका धन्यवाद करता है।

यीशु ने अपनी कहानी को बहुत से प्रश्नो के रूप में सुनाया, ताकि वह अपने श्रोताओं को सोचने के लिए मज़बूर कर सकें। पहला सवाल है, "तुम में से ऐसा कौन है, यदि जिसके पास दास हो, ... वह उसका इंतज़ार करे?" अपेक्षित उत्तर "नहीं, वह उसका इंतज़ार नहीं करेगा।"

दूसरा सवाल है, "क्या वह उसे यह और वह काम करने की आज्ञा न देगा?" अपेक्षित उत्तर "हाँ, वह उसे है यह और वह काम करने की आज्ञा देगा।"

तीसरा सवाल है, "क्या वह उस दास का अहसान मानेगा, क्योंकि उन्होंने वे ही काम किये थे जिसकी आज्ञा दी गयी थी?" अपेक्षित उत्तर "नहीं है, वह उसका अहसान नहीं मानेगा।"

---

2. दृष्टान्त के तत्काल संदर्भ की जांच करें और उसके तत्वों को निर्धारित करें।

परिचय। दृष्टांत की "कहानी" का संदर्भ "स्थान" और "दृष्टांत की व्याख्या या अनुप्रयोग" से मिलकर बना हो सकता है। दृष्टांत का पृष्ठभूमि दृष्टांत के *उपलक्ष्य*, या दृष्टांत की *परिस्थिति* का वर्णन कर सकती है। पृष्ठभूमिल आमतौर पर दृष्टांत की कहानी से *पहले* पायी जाती है और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग आमतौर पर दृष्टांत की कहानी के *बाद* पाया जाता है।

खोजें और चर्चा करें। इस दृष्टांत का स्थान, कहानी और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग क्या है?

ध्यान दें।

(1) दृष्टान्त का स्थान लूका 17:1-6 , 11-19 में निहित है।

इसमें तीन भाग होते हैं: एक गंभीर चेतावनी, एक महान प्रोत्साहन और एक विपरीत उदाहरण। यीशु अपने शिष्यों को उपदेश दे रहे थे लेकिन वहाँ पर अन्य लोग भी थे जो उनके उपदेशों को सुन रहे थे (उदाहरणार्थ, फरीसी, लूका 16:1,14; 17:20)। ये गंभीर चेतावनी न केवल मसीहियों को, बल्कि गैर-मसीहियों को भी दी गयी है।

गंभीर चेतावनी किसी अन्य व्यक्ति को पाप करने के लिए उकसाने के बारे **में है (लूका 17:1-4)।** लूका 16 अध्याय में, यीशु ने लोगों को नरक में जाने के बारे में चेतावनी दी थी। नरक एक भयानक जगह है (लूका 16:23-24), और जब एक बार कोई व्यक्ति वहाँ चला जाता है, तो वहां से बचना असंभव है (लूका 16:26-31)! इसलिए, लोगों को अपने बातों और कार्यों को लेकर सतर्क होना चाहिए, ऐसा न हो कि अन्य लोग भटक जाएँ और हमेशा के लिए नाश हो जाएं (लूका 17:1)। प्रलोभन (लालच) आने के लिए बाध्य हैं, क्योंकि फैलना पाप के स्वभाव में है। लेकिन जानबूझकर प्रलोभन का कारण होना एक

भयानक बात है! अगर कोई व्यक्ति मसीह छोटे से छोटे शिष्य द्वारा पाप कराने का कारण बनता है, अर्थात वह उसके मार्ग में जानबूझकर किसी ऐसे जाल को डालता है जो उसे पाप करने के लिए उकसाए तो यह एक बहुत ही भयानक बात है। यीशु उन सभी लोगों को एक भविष्यसूचक श्राप (“हाय ”) देते हैं जो दूसरों को जानबूझकर पाप करने के लिए उकसाते हैं और अपनी बुराई से पश्चाताप नहीं करते हैं। विचार करें कि यीशु ने मत्ती 13:41 में उन लोगों के बारे में क्या कहा जो पाप और बुराई करते हैं। दूसरों को पाप करने के लिए जानबूझकर उकसाते वाले इस पाप को बहुत गंभीर माना जाता है, क्योंकि शैतान द्वारा जानबूझकर किए गए प्रलोभन (लालच) के माध्यम से पाप ने मानव संसार में प्रवेश किया (उत्पत्ति 3:1-6)। और इन प्रलोभनों (लालच) के माध्यम से है कि मानव *संसार* में पाप का फैलना जारी है (1तीमुथियुस 6:9-10)। न तो परमेश्वर का कलाम और न ही इतिहास के तथ्य किसी को लुभाने (बहकाने, लुभाने) के *द्वारा उससे* भयानक पाप कराने की कोई छूट नहीं देते हैं (लूका 22:22; प्रेरितों 2:23)।

इसके अलावा, मसीहियों को अपनी बातों और कार्यों को लेकर सतर्क होना चाहिए, ऐसा न हो कि उनकी बुरी भाषा से प्रगट हो की वे भी इस संसार के लोगों के सामान हैं जो परमेश्वर के बच्चों को पाप करने के लिए प्रेरित करते हैं (मत्ती 18:7)। कोई भी व्यक्ति, जो यह महसूस करता है कि जो कुछ भी कहता है या करता है, उस से वह दुसरो को पाप के लिए उकसा रहा है, तो उसे इस बुराई को मिटाने के लिए सख्त उपाय करने चाहिए (मत्ती 18:6,8-9)। हालाँकि, पाप के प्रति अभिलाषाओं को मिटाना असंभव है, परन्तु परमेश्वर के अनुग्रह से स्वयं को ऐसे लोगों के समूह का भाग होने से रोकना संभव है जो दूसरों को जानबूझकर पाप करने के लिए उकसाते हैं (भजन संहिता 1:1; 1कुरिन्थियों 10:13)।

अत:, एक मसीही को लगातार अपने जीवन पर नजर रखनी चाहिए। उसे सतर्क होना चाहिए कि वह जानबूझकर किसी अन्य व्यक्ति को पाप करने के लिए न उकसाए (लूका 17:1-3)। उसका जीवन को मसीह पर निर्भरता में जीना चाहिए (यूहन्ना 15:5), उसे अक्सर पवित्र आत्मा से उसके जीवन में पाये जाने वाले किसी भी पाप के लिए कायल करने के लिए कहना चाहिए जिसके लिए पश्चाताप करने की आवश्यकता हो (यूहन्ना 16:8) और जब कोई अन्य जन उसके जीवन में कुछ गलत बातों को देखकर उन्हें बताएं तो वह अपने आप को विनम्र करे। मसीहियों को एक दूसरे के जीवन पर भी ध्यान देना चाहिए। यदि कोई मसीही पाप करता है, तो उसे फटकारना चाहिए (मत्ती 18:15-17)। अगर वह पछताता है, तो उसे माफ कर दिया जाना चाहिए (मत्ती 17:3-4)। जिस प्रकार किसी के लिए जानबूझकर किसी दूसरे व्यक्ति को पाप में फंसाना गलत है, उसी प्रकार किसी व्यक्ति को उसके पाप का पश्चाताप करने पर क्षमा न करना भी गलत है। पाप को पछताने और पश्चाताप करने वाले पापी को क्षमा करने की यह प्रक्रिया कभी भी समाप्त नहीं होनी चाहिए (लूका 17:4)। बस एक दूसरे पर दोष लगाना व निंदा करना मना है (मत्ती 7:1-2), लेकिन इसके विपरीत, इसका आदेश है की आवश्यक होने पर एक दूसरे को फटकारें (लूका 17:3; 1कुरिन्थियों 5:9-13)। जब पापी अपने पाप का पश्चाताप करके विजय प्राप्त करता है, तो जिस व्यक्ति के साथ अन्याय हुआ है, उसे क्षमा करके और उसके प्रति दयालु *बनकर* विजय प्राप्त करनी चाहिए (लूका 17:3-4; याकूब 2:12-13)।

परमेश्वर के कार्यों को पूरा करने वाले विश्वास को बहुत सराहा गया है (लूका 17:5-6)। दूसरों को पाप कराने के लिये उकसाने से दूर रहने और हमेशा क्षमा करने के लिए तैयार रहने के लिए, परमेश्वर के साहस, शक्ति और प्रेम की आवश्यकता होती है! और यह परमेश्वर के साहस, शक्ति और प्रेम को प्राप्त करने के लिए विश्वास की आवश्यकता है! **यह विश्वास करने के लिए कि उन्हें ऐसा साहस, शक्ति और प्रेम उनकी प्रार्थनाओं के जवाब में मिल जाएगा, उन्हें यीशु के चेलों से अधिक विश्वास की आवश्यकता होगी (लूका 17: 5)** । लेकिन यीशु ने उन्हें और हमें निराश न होने के लिए प्रोत्साहित किया।

विश्वास, चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, अभ्यास करने पर बढ़ता है ! **अगर हम परमेश्वर के साथ भरोसेमंद रिश्ते में कायम रहते हैं तो परमेश्वर या मसीह द्वारा दिया कोई भी लक्ष्य हासिल करना हमारे नामुमकिन नहीं होगा (लूका 17: 6)** । हमें विश्वास करना चाहिए कि जब परमेश्वर हमें आज्ञा देते हैं , वह हमें साहस, शक्ति और प्रेम भी देतें हैं ताकि हम परमेश्वर की आज्ञाओं को पूरा करने में सक्षम हों। आवश्यक हमारे विश्वास की मात्रा नहीं है, बल्कि यह है कि हमारा मसीह के साथ ऐसा विश्वास पर आधारित रिश्ता है। विश्वास, चाहे कितना ही छोटा क्यों न हो, अभ्यास करने पर बढ़ता है !

वर्तमान संदर्भ में, मसीह हमें निम्नलिखित कार्य सौंपता है: अर्थात दूसरों को पाप कराने के लिये उकसाने से दूर रहना और हमारे विरुद्ध पाप करने वाले लोगों को हमेशा क्षमा करना । यद्यपि ये कार्य अत्यंत कठिन हैं, परमेश्वर के साहस, शक्ति और प्रेम से इन्हें पूरा किया जा सकता है। हमें यही विश्वास करना चाहिए! लूका अध्याय 17:11-19 में कोढ़ी ने मसीह द्वारा उसे दिए गए कार्य के प्रति विश्वास से प्रतिक्रिया दी मसीह ने उसे रास्ते में ही चंगा कर दिया। मसीह में उसका विश्वास इतना मज़बूत था कि उन्होंने चंगाई का कोई भी प्रमाण देखने से पहले ही उस पर काम करना प्रारंभ कर दिया (तुलना करें। लूका 7:1-10)।

इसके विपरीत उदाहरण सामरी कोढ़ी के रवैये के बारे में है। पहला मुद्दा यह है कि शिष्यों को चेतावनी दी **गयी** है कि वे इस बात के लिए *ज़िम्मेदार* हैं कि उनकी सेवा के कारण अन्य लोग पाप में ना **पड़ें** । दूसरा मुद्दा यह है कि शिष्यों को प्रोत्साहित किया जाता है कि उनका *विश्वास* उन्हें हर उस कार्य को पूरा करने के लिए प्रेरित करेगा जो परमेश्वर उन्हें सौंपता है। लेकिन तीसरा मुद्दा एक सवाल बना हुआ है, "किस भावना के साथ शिष्य बाहर जाएंगे और अपने विभिन्न कार्यों में परमेश्वर की सेवा करेंगे?" उस प्रश्न का उत्तर लूका 17:7-10 में अयोग्य सेवक के दृष्टांत में दिया गया है और इसके विपरीत उदाहरण लूका 17:11-19 में दिए दृष्टान्त में दिया गया है जो उसके बाद आता है। लूका वर्णन करता है कि दस कोढ़ी, जिन्होंने वो किया जो यीशु ने उन्हें करने के लिए कहा था, वे चंगे हो गए, लेकिन उनमें से केवल एक ही प्रभु को धन्यवाद देने के लिए वापस आया। यह संभव है कि यह घटना उस विपरीत आत्मा का वर्णन करती है जिसका वर्णन अयोग्य सेवक के दृष्टांत में किया गया है।

(2) दृष्टान्त की कहानी लूका 17:7- 9 में निहित है।

(3) दृष्टांत की व्याख्या या अनुप्रयोग लूका 17:10 में निहित है।

यीशु ने कहा, "इसी रीति से *तुम* भी जब उन सब कामों को कर चुको जिसकी आज्ञा तुम्हें दी गई थी, तो कहो, "हम निकम्मे दास हैं; जो हमें करना चाहिए था हमने केवल वही किया है।" स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग स्वामी के बारे में नहीं है, लेकिन दास के बारे में है । दृष्टांत की कहानी में दास ने वही किया जो उसे करने के लिए कहा गया था। और स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में, जब शिष्यों ने सब कुछ किया है जो उन्हें करने के लिए कहा गया था, तो उन्हें खुद से कहना चाहिए कि वे अयोग्य सेवक हैं जिन्होंने अपना कर्तव्य निभाया है।

स्पष्टीकरण में मुख्य शब्द हैं "अयोग्य दास होना" (ग्रीक: डौलोई एक्ट्रियो) और "अपना कर्तव्य करना"। संदर्भ में अधिक जानकारी की कमी के कारण, इस दृष्टान्त के दो संभावित स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग हैं। दोनों स्पष्टीकरण (या अनुप्रयोग) उस *दृष्टिकोण या भावना से संबंधित हैं जिसके साथ दास काम करता* है।

पहली व्याख्या एक दास के दृष्टिकोण और भावना के साथ काम करने पर ज़ोर देती है। दृष्टान्त की कहानी में, दास केवल वही करता है जो उसे करने के लिए कहा जाता है। हालाँकि उसकी आज्ञाकारिता में कुछ भी गलत नहीं है,लेकिन सेवा करने के उसके रवैये में कुछ गलत है! वह केवल तब काम करता है जब उसे ऐसा करने के लिए कहा जाता है । दास को जारी

आदेशों का अर्थ यह हो सकता है कि दास नए आदेशों की प्रतीक्षा कर रहा था। *एक दास की आत्मा* ने उसे अपने कब्ज़े में ले लिया था , अर्थात वह केवल अपना कर्तव्य पूरा करता था , कुछ कम नहीं और निश्चित रूप से अधिक भी नहीं। अपने कार्य को पूरा करने के बाद, वह तब तक प्रतीक्षा करता है जब तक कि उसका स्वामी उसे एक नया कार्य नहीं देता। खुद से बाहर, वह सेवा करने के लिए कोई पहल नहीं करता है। वह एक ठंडा गणना करने वाला दास है, जो *केवल न्यूनतम या आदेश के पत्र के अनुसार करने के लिए निश्चयी* है। उसका हृदय उसकी सेवा में नहीं है। एक दासत्व की भावना के साथ वह अपने कर्तव्यों का पालन करता है। संपूर्ण सेवा की भावना नहीं है, कोई परिश्रम नहीं है, कोई कृतज्ञता नहीं है, और उनकी सेवा में कोई खुशी नहीं है। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि स्वामी उसको वह करने के लिए धन्यवाद नहीं करता है जो उसे करने के लिए कहा जाता है!

इस दृष्टांत का अनुप्रयोग तब यह होगा कि *यदि* मसीही लोग इस तरह भावनाहीन सेवक की तरह सेवा करते हैं, केवल वही करते हैं जो उन्हें करने के लिए कहा जाता है और इससे अधिक नहीं, तो ऐसे मसीहियों को खुद से कहना चाहिए कि वे किसी भी धन्यवाद के योग्य नहीं हैं, क्योंकि उन्होंने अपने कर्तव्य से ज़्यादा कुछ भी नहीं किया हैं। उन्हें अपनी सेवा को अपने स्वामी से किसी भी प्रशंसा, प्रशंसा या पुरस्कार प्राप्त करने के लिए अयोग्य रूप में मानना चाहिए, क्योंकि उन्होंने उनसे ज़्यादा कुछ नहीं किया है जो उनसे अपेक्षित था।

जब मसीही जन परमेश्वर के राज्य में सेवा करते हैं, तो उन्हें एक दास की इस भावना या रवैये को छोड़ देना चाहिए। उनकी सेवा पूरे दिल से, मेहनत के साथ और साधारण से ऊपर होनी चाहिए। जैसे यीशु मत्ती अध्याय 5:20 में कहते हैं, "कि यदि आपकी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से(ग्रीक: परिसस प्रतिस्थापन पलिओन) बढ़कर न हो, तो आप स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे।" (तुलना करें मत्ती 5:47-48)।

इस प्रकार लूका चंगाई प्राप्त करने वाले सामरी कोढ़ी की आत्मा के साथ दूसरे दृष्टांत में अयोग्य सेवक की भावना के साथ तुलना करता है। अयोग्य सेवक ने केवल अपना कर्तव्य किया (लूका 17:7-10), जबकि सामरी ने अपने कर्तव्य से अधिक किया (लूका 17:11-19)। हालाँकि यीशु ने दस कोढ़ियों को चंगा किया था, लेकिन केवल सामरी अपने उपचार के लिए परमेश्वर का धन्यवाद और प्रशंसा करने के लिए लौट आया। सभी दस कोढ़ियों ने अपना कर्तव्य निभाया, अर्थात्, उन्होंने वही किया जो यीशु ने उन्हें करने का आदेश दिया था। लेकिन उनमें से केवल एक ने यीशु से जो करने का आदेश दिया था, उससे अधिक किया था। वह स्वतंत्र रूप से परमेश्वर का धन्यवाद और प्रशंसा करने के लिए वापस आया था! इस दृष्टांत में, यीशु अपनी सेवा में फरीसियों के व्यवस्था के रवैये पर हमला करते हैं। मसीहियों को परमेश्वर की सेवा पूरी निष्ठा और लगन से करनी चाहिए, अपने कर्तव्य से ज़्यादा।

दूसरी व्याख्या विनम्रता की भावना से सेवा करने पर ज़ोर देती है। दृष्टान्त की कहानी में, दास वही करता है जो उसे बताया जाता है। हालाँकि उसकी आज्ञाकारिता में कुछ भी गलत नहीं था, गलती उसके सेवा करने के रवैये में थी! कहानी के सवालों का मतलब यह हो सकता है कि दास को अपनी सेवा के लिए किसी प्रकार के ऋण या पुरुस्कार की उम्मीद थी। *घमंड की आत्मा और एक अतिरंजित आत्मसम्मान* ने उसे अपने कब्जे में ले लिया था , अर्थात, वह अपनी सेवा के लिए अपने स्वामी से कुछ उम्मीद करता है। वह बहस करता है कि उसका स्वामी उसे दिन भर कड़ी मेहनत करने का श्रेय दे सकता है और वह समझ सकता है कि दिन के अंत में उसे भी कुछ आराम और विश्राम की भी आवश्यकता होती है। या उसका स्वामी उसकी सेवा के लिए उसे धन्यवाद दे सकता था। यह दास सोच रहा था कि वह *अपने कर्तव्य से अधिक* कर रहा है और *वह* एक बेहतर

व्यवहार के *योग्य* है या किसी तरह के पुरुस्कार के योग्य है! *यदि* दास के मन में ऐसे विचार उत्पन्न होते हैं , तो वह आत्मिक रूप से घमंडी और खुद के बारे में बहुत अधिक सोचने वाला है।

इस दृष्टांत का अनुप्रयोग यह होगा कि जब मसीही जन परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करें तो, उन्हें स्वयं से कहना चाहिए कि वे अपने कर्तव्य को करने के लिए किसी भी प्रशंसा, श्रेय या पुरस्कार के योग्य नहीं हैं। उन्हें अपनी सेवा को एक विशेषाधिकार के रूप में मानना चाहिए, न कि किसी तरह के पुरस्कार के योग्य। मसीही जन परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने या सेवा करने के लिए अतिरिक्त श्रेय के लायक नहीं हैं। जिस आज्ञाकारिता को हम पूरा करते हैं वह कोई अतिरिक्त काम नहीं है। इस दृष्टांत में, यीशु हमारी सेवा को निरर्थक या बेकार नहीं बता रहे हैं , न ही वह पुरस्कारों से वंचित रखना चाहते हैं। लेकिन यीशु अनुचित आत्मसम्मान और दास के आध्यात्मिक घमंड का सामना कर रहे हैं। मसीहियों को पुरस्कार की उम्मीद किए बिना विनम्रता की भावना से परमेश्वर की सेवा करनी चाहिए।

---

3. दृष्टान्त के प्रासंगिक और अप्रासंगिक विवरण की पहचान करें।

परिचय। यीशु का इरादा दृष्टान्त की कहानी में हर विवरण में आत्मिक महत्व को रखना नहीं था। दृष्टांत रूपक नहीं हैं। प्रासंगिक विवरण दृष्टांत की कहानी में वे विवरण हैं जो केंद्रीय बिंदु या मुख्य विषय या दृष्टांत के पाठ को सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, हमें दृष्टांत की कहानी के प्रत्येक विवरण के लिए स्वतंत्र आत्मिक महत्व का वर्णन नहीं करना चाहिए।
सिखाएं। इस दृष्टांत में, यीशु किसी भी विवरण को कोई विशेष अर्थ नहीं देता है।

---

4. दृष्टान्त के मुख्य संदेश को पहचानें।

परिचय करना - दृष्टांत का मुख्य संदेश (केंद्रीय विषय) या तो स्पष्टीकरण या अनुप्रयोग में या कहानी में पाया जाता है। जिस तरह से यीशु मसीह ने स्वयं दृष्टांतों को समझाया या लागू किया है, हम जानते हैं कि हमें दृष्टान्तों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। एक दृष्टांत में सामान्य रूप से केवल एक मुख्य पाठ होता है, एक केंद्रीय बिंदु बनाने के लिए। इसलिए, हमें कहानी के प्रत्येक विवरण में एक आत्मिक सच्चाई खोजने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, बल्कि एक मुख्य पाठ की तलाश करनी चाहिए।
चर्चा करें। इस दृष्टान्त का मुख्य संदेश क्या है?
ध्यान दें।

लूका 17: 7-10 में अयोग्य सेवक का दृष्टांत "परमेश्वर के राज्य में सेवा" के बारे में सिखाता है।

दृष्टांत का मुख्य संदेश निम्नलिखित हो सकता है। "मसीहियों को योग्य सेवक बनने का प्रयास करना चाहिए, जो केवल अपने कर्तव्य से अधिक करते हैं।" मसीहियों को दास की भावना के साथ सेवा नहीं करनी चाहिए, जो केवल वही करता है जो उसको कहा जाता है। उन्हें एक स्वतंत्र भावना के साथ सेवा करनी चाहिए, स्वेच्छा से, पूरे दिल से और ख़ुशी से अर्थात जितना उनसे करने के लिए कहा गया है उससे अधिक (1 पतरस 5:2)। वे प्रेम और कृतज्ञता की भावना से सेवा करते हैं। एक दास की आत्मा को परमेश्वर के राज्य में कोई सराहना नहीं मिलती है।

या दृष्टान्त का मुख्य संदेश निम्नलिखित भी हो सकता है। *"मसीहियों को अपने आप को अयोग्य सेवकों के रूप में मानना चाहिए, जो अपना कर्तव्य करते हैं।"* मसीहियों को गर्व की भावना के साथ सेवा नहीं करनी चाहिए, यह सोचकर कि वे जो करने के लिए कहा जाता है, करने के लिए प्रशंसा, श्रेय या पुरस्कार के योग्य हैं। उन्हें सेवा का एक विशेषाधिकार के रूप में

सम्मान करना चाहिए, उनकी आज्ञाकारिता के लिए श्रेय की उम्मीद किए बिना। वे नम्रता की भावना से सेवा करते हैं। एक घमंडी आत्मा को परमेश्वर के राज्य में कोई सम्मान नहीं मिलता है (तुलना करें 1पतरस 5:5-6)।

सेवा परमेश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषताओं में से एक है! परमेश्वर के राज्य के वास्तविक लोग अपनी सेवा के लिए उनकी अपेक्षा से कहीं अधिक खुशी-खुशी काम कर रहे हैं, जो उनकी प्रशंसा, ऋण या पुरस्कार की अपेक्षा किए बिना करते हैं।

---

5. बाइबल में समानांतर और विपरीत पद्यांशों के साथ दृष्टांत की तुलना करें।

परिचय। कुछ दृष्टान्त एक दूसरे के समान हैं और उनकी तुलना की जा सकती है। हालाँकि, सभी दृष्टांतों में सच्चाई के समानांतर या विपरीत सत्य है जो बाइबल के अन्य अंशों में पढ़ाया गया है। सबसे महत्वपूर्ण प्रति सन्दर्भ खोजने की कोशिश करें जो हमें दृष्टांत की व्याख्या करने में मदद करते हैं। हमेशा बाइबल की प्रत्यक्ष स्पष्ट शिक्षा के साथ दृष्टान्त की व्याख्या की जाँच करें।
खोजें और चर्चा करें। बाइबल के प्रत्येक अंश में जो पढ़ाया जाता है उसकी तुलना अयोग्य सेवक के दृष्टांत से कैसे होती है?

(1) निकम्मा दास और अयोग्य दास।

पढ़ें मत्ती 25:30 । मूल शब्द "निकम्मा दास" (ग्रीक: अचरिओं डोलों) मूल रूप से इन दो बाइबल पद्यांशों में उपयोग किया जाता है। मत्ती 25:30 में दास एक *निकम्मा या अयोग्य* दास था, क्योंकि उसने अपने सौंपे गए काम के साथ कुछ भी नहीं किया। निकम्मे दास को नर्क में फेंक दिया गया।

लेकिन लूका 17:10 में दास एक *अयोग्य या निंदनीय* दास था, क्योंकि उसने उससे अधिक नहीं किया था जो उसे करने के लिए कहा गया था। अयोग्य दास को अपने स्वामी से कोई प्रशंसा नहीं मिली।

(2) असाधारण दास ।

***पढ़ें* मत्ती** 5: 20,23-24,40-48। यह दृष्टान्त और पहाड़ी उपदेश के बीच तुलना है। मत्ती अध्याय 5:20 में यीशु ने कहा, "कि यदि आपकी धार्मिकता शास्त्रियों और फरीसियों की धार्मिकता से *बढ़कर* न हो, तो आप स्वर्ग के राज्य में कभी प्रवेश करने न पाओगे।" परमेश्वर के राज्य की उपमा साधारण से नहीं अपितु असाधारण से की गयी है। परमेश्वर के राज्य के लोग सामान्य से अधिक करते हैं। वे अपने कर्तव्य से ज़्यादा कुछ करते हैं।

उदाहरण के लिए, मत्ती अध्याय 5:23-48 में, "साधारण" का मतलब हत्या से वरन क्रोधित होने से भी बचना , जिसे आत्मिक तौर पर हत्या करना माना गया है। लेकिन "असाधारण" का मतलब है की आप आगे बढ़कर उन लोगों से पुन: सुलह कर लेते हैं, जिन्होंने उनके विरुद्ध कोई काम किया होता है ! "साधारण" निष्पक्ष और न्यायपूर्ण होना है और पापियों को उचित सजा देना है। लेकिन "असाधारण" एक दुष्ट व्यक्ति का विरोध ना करना है , और साथ ही उसकी दुष्टता को सहन करना भी है ! "साधारण" एक विदेशी सैनिक द्वारा आग्रह करने पर उसके झुण्ड को एक मील ले जाने जैसा है । लेकिन "असाधारण" उसकी मांग से अधिक करना है जैसे एक के बजाये दो मील चलना! "साधारण" का अर्थ व्यक्ति को उसकी मांग के हिसाब से देना है। लेकिन "असाधारण" उसे उसकी मांग से अधिक देना है! "साधारण" अपने भाइयों का अभिवादन करना है, और केवल उन लोगों से प्यार करना है जो आपसे प्यार करते हैं और आपके लिए अच्छा करते हैं। लेकिन यीशु पूछते हैं, " तुम दूसरों से बढ़कर क्या कर रहे हो ?" (मत्ती 5:47)।
"असाधारण" अजनबियों को शुभकामनाएं देना , अपने दुश्मनों से प्यार करना , उन लोगों के लिए अच्छा करना जो आपसे

नफरत करते हैं, उन लोगों को आशीर्वाद देना जो आपसे दुर्व्यवहार करते या आपको दुखी करते हैं (लूका 6:27-28)। यीशु ने मसीहियों से अपेक्षा की कि वे धार्मिक अगुवों और शिक्षकों (फरीसियों) या अन्यजातियों (मानवतावादियों) की तुलना में अधिक करें। " परमेश्वर के राज्य की उपमा साधारण से नहीं अपितु असाधारण से की गयी है, वे अपने कर्तव्य से अधिक , यहां तक कि उनके धार्मिक कर्तव्य से भी अधिक करते हैं। और वे यह सब पूरे जोश और पूरी उदारता की भावना के साथ करते हैं।

(3) एक कृतज्ञ दास ।

पढ़ें लूका 17: 11-19। यह दृष्टांत और अनुभाग के बीच एक तुलना है, जो दृष्टान्त के तुरंत बाद दिया गया है। लूका 17: 11-19 में यीशु पूछते हैं, "क्या दसों शुद्ध न हुए, तो फिर वे नौ कहाँ ***हैं*** ," क्या परदेशी को छोड़ कोई और न निकला जो परमेश्वर की बढ़ाई करता है? " सभी दस कोढ़ियों ने अपना कर्तव्य निभाया: उन्होंने वही किया जो यीशु ने उन्हें करने का आदेश दिया था। लेकिन उनमें से केवल एक ने उससे अधिक किया था, जो उसे करने का आदेश दिया गया था। वह यीशु के पास लौट आया, उसने ऊँची आवाज़ में परमेश्वर की स्तुति की और यीशु ने जो उसके लिए किया उसके लिए विनम्रतापूर्वक धन्यवाद दिया! उसने उस भावनाहीन दास के बिल्कुल विपरीत काम किया। उससे जितना कहा था उससे ***ज़्यादा*** किया था! उसने अपने कर्तव्य से ***ज़्यादा*** काम किया। वह स्वतंत्र रूप से परमेश्वर का धन्यवाद और प्रशंसा करने के लिए वापस आया था! इसी तरह, परमेश्वर के राज्य के लोग उससे अधिक करते हैं जो यीशु उन्हें करने के लिए कहते है। और वे यह सब प्रशंसा और कृतज्ञता की भावना से करते हैं।

(4) नम्र दास।

पढ़ें लूका 12: 37; 22:27। यह दृष्टांत और यीशु के अपने उदाहरण के बीच तुलना है। चौकस सेवकों के दृष्टान्त में, लूका अध्याय 12:37 में, यीशु ने प्रतिज्ञा की, "धन्य हैं वे दास जिन्हें स्वामी आकर जागते पाए ; मैं तुम से सच सच कहता हूँ कि वह कमर बाँध कर उन्हें भोजन करने को बैठायेगा, और पास आकर उनकी सेवा करेगा। " और लूका 22:27 में, यीशु ने कहा, बड़ा कौन है, वह जो भोजन पर बैठा है, या वह जो सेवा करता है? क्या वह नहीं है जो भोजन पर बैठा है? लेकिन मैं तुम्हारे बीच में से सेवक के समान हूँ। " अपने व्यक्तिगत उदाहरण में, यीशु ने कभी खुद की बातों के विरुद्ध काम नहीं किया। उन्होंने वो ही किया जो उन्होंने उपदेश दिया। उन्होंने सेवा का प्रचार किया और उन्होंने सेवा की । यूहन्ना अध्याय 13:15 में, उसने अपने चेलों के पाँव धोए और कहा, "क्योंकि मैंने तुम्हें नमूना दिखा दिया है कि जैसा मैंने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो।" इसी तरह, परमेश्वर के राज्य के लोग विनम्रता की भावना के साथ और अन्य लोगों के लिए एक उदाहरण स्थापित करने की भावना के साथ काम करते हैं।

(5) सच्चे दास।

पढ़ें कुलुस्सियों 3:22-24। कुलुस्सियों अध्याय 3:22-24 में, पौलुस मसीही सेवकों या दासों को चेतावनी देता है कि सिर्फ अपने स्वामी द्वारा अपने पक्ष को जीतने के लिए अपने स्वामी की बात ना मानें। वह उन्हें ईमानदारी और प्रभु के प्रति श्रद्धा की भावना से सेवा करने के लिए प्रेरित करता है। इसी तरह, परमेश्वर के राज्य के लोग हर चीज को पूरी ईमानदारी से करते हैं जैसे कि वे प्रभु के लिए कर रहे हैं। और वे यह सब प्रभु के प्रति ईमानदारी और श्रद्धा की भावना से करते हैं।

---

6. परमेश्वर के राज्य में सेवा के बारे में दृष्टान्तों की मुख्या शिक्षाओं या पाठों का सारांश।

पढ़ें। भंडारी के बारे में दृष्टांत लूका 17:7-10 में अयोग्य सेवक के दृष्टांत हैं और मत्ती 24: 45-51 और 12- 42-46 में वफादार

और विश्वासघाती सेवकों के दृष्टांत हैं।

चर्चा करें। परमेश्वर के राज्य में सेवा के बारे में दृष्टान्तों के मुख्य उपदेश या पाठ क्या हैं? यीशु मसीह ने हमें क्या *जानना* या *मानना* सिखाया और उसने हमें क्या *बनना* या *करना* सिखाया?

ध्यान दें।

(1) सभी लोगों को पता होना चाहिए कि परमेश्वर या यीशु मसीह कैसे हैं।

यीशु मसीह स्वयं हमारे बीच एक सेवक थे। वह सेवा करवाने के लिए नहीं आया था, सेवा करने के लिए और कई (मरकुस 10:45) के लिए रिहाई के रूप में अपने जीवन को देने के लिए। यीशु मसीह ने प्रत्येक मसीही को कुछ कार्य और जिम्मेदारियाँ सौंपी हैं जिनमें उसे सेवा करनी चाहिए। अपने दूसरे आगमन पर, वह निश्चित रूप से लोगों को या तो उनके भवनहीन मन के अनुसार या उनके कर्तव्य की तुलना में अधिक करने की उनकी पूरी भावना के अनुसार न्याय करेगा। वह उन्हें उनके विश्वासयोग्य या विश्वासघात के अनुसार न्याय देगा।

(2) मसीहियों को पता होना चाहिए कि उन्हें क्या होना चाहिए।

प्रत्येक मसीही का कर्तव्य है कि वह उस कार्य के प्रति विश्वासयोग्य हो जो यीशु मसीह ने उसे इस धरती पर करने के लिए दिया है। न केवल मसीही अगुवों या शिक्षकों, बल्कि प्रत्येक मसीही के पास एक निर्धारित कार्य है और यीशु मसीह ने उनसे विश्वासयोग्य होने की अपेक्षा की है। किसी भी विशिष्ट कार्य के अलावा, प्रत्येक मसीही से अपेक्षा की जाती है कि वह स्वामी के कार्य को पूरा करे और ज़रुरतमंद लोगों की देखभाल करे।

अपने दूसरे आगमन पर, यीशु मसीह प्रत्येक वफादार मसीही को कुछ विशिष्ट कार्यों को नए स्वर्ग और नई पृथ्वी (लूका 19: 17, 19) में सौंपेगा। उसने कहा, "धन्य, हे उत्तम दास!" बहुत बहुत थोड़े में विश्वासयोग्य निकला अब दस नगरों पर अधिकार रख।" वर्तमान पृथ्वी पर और नई पृथ्वी पर प्रत्येक कार्य सेवक की व्यक्तिगतता और पृथ्वी पर रहते हुए उसकी वफ़ादारी के साथ सामंजस्य में होगा।

प्रतिभा (क्षमता / संभावना) जो परमेश्वर देता है, उसका उपयोग और विकास किया जाना चाहिए (मत्ती 25:15) और व्यक्ति को अधिकांश समय बनाना चाहिए (इफिसियों 5:16)। किसी को आलसी होने का अधिकार नहीं है। "यदि कोई काम करना न चाहे तो खाने भी न पाए।" (2थिस्सलुनीकियों 3:10)। किसी को भी अकेले रहने का अधिकार नहीं है (लूका 9:23)। "इसलिए तुम चाहे खाओ, चाहे पियो, चाहे जो कुछ करो, सब कुछ परमेश्वर की महिमा के लिए करो।" (1कुरिन्थियों 10:31)। "मैं सभी मनुष्यों के लिए सब कुछ बना कि किसी न किसी रीति से कई एक का उद्धार कराऊँ।" (1कुरिन्थियों 9:22)।

"परमेश्वर के साथी सहकर्मी" कहे जाते हैं (1कुरिन्थियों 3:5-9)। यह जानना बहुत ही सौभाग्य की बात है कि परमेश्वर के सभी सेवकों को पृथ्वी पर परमेश्वर के कुल कार्यों को पूरा करने के लिए एक विशिष्ट कार्य दिया गया है!

लेकिन जब मसीही सेवा करें, तो उन्हें दास की भावना के साथ सेवा नहीं करनी चाहिए, अर्थात केवल उन कामों को करना जो हमसे करने के लिए कहा जाता है। परमेश्वर के राज्य में एक दासत्व की भावना को कोई बढ़ावा नहीं मिलता है। मसीहियों को एक स्वतंत्र भावना के साथ सेवा करनी चाहिए, स्वेच्छा से, पूरे हृदय से और ख़ुशी से जितना वे करने के लिए कहा जाता है उससे अधिक करना चाहिए। वे प्रेम, प्रशंसा और कृतज्ञता की भावना से काम करते हैं। वे नम्रता की भावना से सेवा करते हैं, प्रशंसा, श्रेय या पुरस्कार की तलाश में नहीं। और वे प्रभु के प्रति ईमानदारी और श्रद्धा की भावना से काम करते हैं। वे पृथ्वी

पर लोगों की सेवा करते हैं जैसे कि वे प्रभु की सेवा कर रहे हों। परमेश्वर के राज्य की विशेषता साधारण के द्वारा नहीं, अपितु असाधारण से हैं। परमेश्वर के राज्य के लोग अपने कर्तव्य से अधिक काम करते हैं। वे साधारण से ज़्यादा करते हैं। मसीहियों की विशेषता होती है कि वे असाधारण होते हैं! वे उन कामों को करते हैं जो दूसरे नहीं कर सकते या करना नहीं चाहते, लेकिन उन कामों को किया जाना ज़रुरी है।

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[प्रतिक्रियाएँ]*** **परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना**

आज आपने जो कुछ सीखा है, उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से ***छोटी-छोटी प्रार्थना*** करने के लिए समूह में ***बारियाँ लें।*** या समूह को दो या तीन लोगों में विभाजित करें और आज जो आपने सीखा है उसके प्रतिउत्तर में परमेश्वर से प्रार्थना करें।

6	**तैयारी करें** (2 मिनट)	***[निर्धारित कार्य]*** **अगले अध्याय के लिए**

(समूह अगुवा। समूह के सदस्यों को इस तैयारी को लिखित रूप में घर ले जाने दें या उन्हें इसकी नकल करने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर "एक अयोग्य दास" का प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **यिर्मयाह 15, 17, 18 और 23** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(4) परमेश्वर की बुद्धि। याकूब 1:5।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. बाइबल अध्ययन। घर पर अगला बाइबल अध्ययन तैयार करें। **रोमियों 12:1-21**। बाइबल अध्ययन के पाँच चरणों की विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन सहिंता 5:3)।
7. परमेश्वर के राज्य पर प्रचार करने के लिए अपनी नोटबुक का अद्यतन करें। शांत समय में अपने नोट्स, अपने स्मरण किए हुए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें